विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -०७ -०७ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ-११ फूल और काँटा नामक कविता के बारे में अध्ययन करेंगे।

हैं जनम लेते जगत में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चांद भी,
एक ही–सी चांदनी है डालता।
मेह उन पर है बरसता एक–सा,
एक–सी उन पर हवाएं हैं वहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है समय,
ढंग उनके एक–से होते नहीं।
छेद कर कांटा किसी की उंगलियां,
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
और प्यारी तितलियों का पर कतर,
भौंर का है वेध देता श्याम तन।
फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधी औ' निराले रंग से,
है सदा देता कली दिल की खिला।
खटकता है एक सबकी आंख में,
दूसरा है सोहता सुर सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

~ अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्दार्थ

कुल – खानदान

अनुठा - अद्भुत,अनोखा

वर - सुन्दर

सोहता - शोभा पाता है

वसन - वस्त्र

पर - पंख

मेह - वर्षा